आओ सजायें दोस्तों, तस्वीर घर-संसार की ।।

है नब्ज़ भी बिगडी हुई, रक्तचाप भी कुछ तेज़ है,
तापमान बढता जा रहा, निशानियाँ बुखार की ।।
हड्डियाँ हुई कमज़ोर हैं,करने लगी अब शोर हैं
कडवी ही होती जा रही, बोली भी, और आचार भी ।।
मन दो तो कुछ भाता नहीं, नज़र ठीक से आता नहीं,
हर दोष दूजे में दिखे,तैयरियाँ तकरार की ।।
ऐसे इसे ना छेड दें,कहीं दम ही ना ये तोड दें,
देंगें दुहाई फिर किसे , अपनों के ही सहार की ।।
बीमार मानवता हुई, लाचार मानवता हुई,
अच्छे से इक लुकमान की, है ज़रूरत उपचार की ।।
घर का ही इक हिस्सा है ये, अपना ही तो किस्सा है ये,
आओ सजायें दोस्तों, तस्वीर घर-संसार की ।।

कागज़ की नैया पे सवार, कैसे करे सागर ये पार,
तैयरियाँ तूफ़ान की, पानी इसे है गला रहा ।।
जीवन यूँ ढलता जा रहा, दीमक समय का खा रहा,
है आज का सुल्तान जो, कल खाली हाथ है जा रहा ।।
किस बात का फिर मान है, कैसा ये अभिमान है,
मुट्ठी में भरके रेत को, समझे बहुत कुछ पा रहा ।।
क्यों ज़ुल्म अत्याचार है, कहाँ जीत है, कहाँ हार है,
सपनों की दुनिया में मगन, किसको है दे धोखा रहा ।।
बने जान के अनजान ना, पछतावे का सामान ना,
हो कद्र हर पल की हमें और चेतना होशियार की ।।
भरे रंग इसमें प्यार का , सेवा का और सत्कार का,
आओ सजायें दोस्तों, तस्वीर घर-संसार की ।।

इक बाल के भी टूटने से दर्द होता है हमें,
कई बाल, शोषित हो रहे, और फिर भी हम ख़ामोश हैं ।।
थोडा भी सुख क्यों पाये वो, आगे ना निकल जाये वो,
अपना ही घर भी जलाये दो, आता गर उसपर दोष है ।।
नहीं भाई-भाई से मेल है, सारे यतन क्यों फेल हैं,
अग्नि में डाले तेल हैं, ये ज़ोश है या होश है ।।
हिंसा है भ्रष्टाचार है, दूषित हुए विचार हैं
ये मन बना सियार है, और हम बनें खरगोश हैं ।।
चलता है तो चलने दो भई, कब तक चलेगा दौर ये,
है वक्त बदलने का अब, समय ने है पुकार की ।।
'दिलवर' उठे आगे बढें, अब ग्यान-कर्मों से जडे
आओ सजायें दोस्तों, तस्वीर घर-संसार की ।।

ख़ूबसूरत हो चेहरा अगर, तस्वीर सुंदर हो तभी,
ख़ूबसूरती मोहताज़ नहीं है साज़-ओ-शृंगार की ।।
घर-घर बनाये स्वर्ग हम, खुद से करें शुरुआत हम,
आओ सजायें दोस्तों, तस्वीर घर-संसार की ।।

दिलवर (मुम्बई)